जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – दिसम्बर 2024 ।। अंक – 53 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

उद्यमी बन ललिता ने बनाया परिवार को आत्मनिर्भर (पृष्ठ – 02)

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक का प्रेरक सफर (पृष्ठ – 03)

लैला खातून: हुनर, हिम्मत और उद्यम से मिली नई पहचान (पृष्ठ – 04)

अनूठी पहल से आर्थिक विकास को मिल रहा बल

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में जीविका स्वयं सहायता समूह एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। इस पहल के तहत ग्रामीण महिलाओं ने विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों को अपनाकर अपनी वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर रही है। इन महिलाओं ने समूह के सहयोग से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है और वार्षिक आमदनी बढ़ाकर एक लाख रुपये से अधिक कर ली है। इस उपलब्धि के आधार पर इन्हें 'लखपति दीदी' का दर्जा मिल रहा है।

लक्ष्य और प्रयास

बिहार में जीविका महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु निरंतर क्रियाशील है और महिलाओं की बार्षिक आमदनी एक लाख रुपये से अधिक करने का लक्ष्य रखा गया है। इन प्रयासों के तहत महिलाओं को नियमित बचत, नियमित लेन–देन और नियमित ऋण अदायगी के लिए प्रेरित किया जाता है। साथ ही स्वरोजगार के लिए विषयगत प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग, वित्तीय प्रबंधन, बाजार से जुड़ाव एवं उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

इस पहल के तहत महिलाएँ कृषि, पशुपालन, सूक्ष्म उद्यम और सेवा आधारित क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही हैं। कुछ महिलाओं ने रोजगार के नए अवसरों और नवाचारों को अपनाकर उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनायी है। उदाहरण स्वरूप, 'जीविका दीदी की रसोई', सफाई, और अन्य सेवाओं के माध्यम से रोजगार के स्थायी साधन सृजित किए गए हैं।

लाभ और प्रभाव

'लखपति दीदी' योजना से विविध क्षेत्रों पर सकारात्मक प्रभाव देखा जा रहा है।

1. **आर्थिक सशक्तिकरण:** महिलाओं ने खेती, पशुपालन, हस्तशिल्प और सूक्ष्म व्यवसायों जैसे क्षेत्रों में अपनी दक्षता का विकास किया है। इससे उनकी पारिवारिक आय में बढ़ोतरी हुई और रहन–सहन के स्तर में सुधार हुआ है।

2. **सामाजिक सशक्तिकरण:** आर्थिक मजबूती ने महिलाओं को समाज में सम्मान और पहचान दिलाई है। वे अब परिवार और समाज के निर्णयों में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

3. **रोजगार सृजन:** राज्य के विभिन्न संस्थानों में 'जीविका दीदी की रसोई' बैग क्लस्टर, सिलाई केंद्र, दीदी की पौधशाला, उत्पादक कंपनियों के संचालन एवं अन्य सेवाओं के माध्यम से महिलाओं के लिए रोजगार के स्थायी साधन सृजित हुए हैं।

4. **समेकित विकास:** महिलाओं ने कृषि, पशुपालन और स्वरोजगार के अन्य क्षेत्रों में नई पहल की है। दीदी की नर्सरी और मछली पालन जैसे नवाचारों ने पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा दिया है।

उपलब्धियाँ एवं प्रगति

बिहार में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों में से अब तक 34 लाख से अधिक परिवारों की वार्षिक आय बढ़कर 1 लाख से अधिक हो गई है। इन परिवारों की आय और व्यय का विवरण राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के आजीविका रजिस्टर पोर्टल पर दर्ज किया गया है, ताकि आय का सटीक आकलन किया जा सके।

'लखपति दीदी' योजना का उद्देश्य केवल आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना जागृत करने, उन्हें उच्च आय के विभिन्न साधनों से जोड़ने और बाजार तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में केंद्रित है।

जीविका के प्रयासों और महिलाओं की मेहनत ने न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र आर्थिक और सामाजिक विकास को भी गति दी है। इस पहल ने ग्रामीण महिलाओं को एक नई पहचान दी है, जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं।

उद्यमी बन ललिता ने बनाया परिवार को आत्मनिर्भर

ललिता देवी भागलपुर के सन्हौला प्रखंड अन्तर्गत फाजिलपुर सकरामा पंचायत की निवासी है। यह उद्यमी बन समाज के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। विजेता जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के अंतर्गत अंगद जीविका स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष ललिता देवी ने वर्ष 2016 में समूह से जुड़कर अपने जीवन और परिवार की दशा बदलने की दिशा में कदम बढ़ाया था। उनके पति अरुण मंडल पहले दैनिक मजदूरी पर फर्नीचर निर्माण का काम करते थे, लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर करने की इच्छाशक्ति ने ललिता को समूह से 25,000 रुपये का ऋण लेकर फर्नीचर उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

समूह के सहयोग से ललिता ने अपने व्यवसाय का लगातार विस्तार किया है। समूह से पुन: 80,000 रुपये ऋण लेकर उन्होंने फर्नीचर निर्माण इकाई को और मजबूत किया और बाद में 1 लाख रुपये ऋण लेकर एल्यूमिनियम गेट, ग्रिल और शीशा सेटिंग का भी काम शुरू किया। अब वह अपने पति के साथ इस व्यवसाय को सफलतापूर्वक संचालित कर रही है।

ललिता बताती हैं कि सामान्य दिनों में वह प्रति माह 60,000 रूपये से 70,000 रुपये की कमाई कर लेती हैं, जबकि शादी–ब्याह के सीजन में उनकी आय 1 लाख से 1.5 लाख रुपये तक पहुँच जाती है।

महज आठवीं तक पढ़ी–लिखी ललिता देवी आज खुद अपने व्यवसाय का संचालन करती हैं और आय–व्यय का हिसाब–किताब रखती हैं। उनकी मेहनत ने परिवार को आत्मनिर्भर बनाया है और वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिलवा रही हैं। ललिता का कहना है कि जीविका स्वयं सहायता समूह उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उनकी कहानी अन्य महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की प्रेरणा देती है।

मछली बिक्री के कारोबार से खुला उन्नति का द्वार

किशनगंज जिला अंतर्गत दिघलबैंक पंचायत की निवासी प्रमिला देवी ने अपनी मेहनत और जीविका स्वयं सहायता समूह के सहयोग से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को पूरी तरह बदल दिया है। पहले उनका परिवार पति रामेश्वर सहनी की मजदूरी से होने वाली आमदनी पर उनके परिवार निर्भर था जिससे पूरे परिवार की परवरिश में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

एक दिन प्रमिला दीदी को जीविका स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने कमल समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। समूह से पहली बार 10,000 रुपये ऋण लेकर उन्होंने मछली बिक्री का व्यवसाय शुरू किया। व्यवसाय से हुई कमाई से उन्होंने ऋण चुकाया। पुन: 20,000 रुपये का दूसरा ऋण लेकर अपने कारोबार को और आगे बढ़ाया। मछली व्यापार में उनकी मेहनत रंग लाई और अब प्रमिला दीदी हर महीने करीब 15,000 रुपये से 20,000 रुपये तक की कमाई कर रही है।

प्रमिला दीदी को व्यवसाय संचालन में उनके पति का भी पूरा सहयोग मिलता है। आमदनी होने से उन्होंने अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई का इंतजाम किया और अपने परिवार के लिए एक पक्का घर भी बनवाया। मछली बिक्री का उनका कारोबार दिनों–दिन प्रगति कर रहा है। वह समूह से और अधिक ऋण लेकर व्यवसाय को आगे बढ़ाने की योजना बना रही है।

प्रमिला दीदी कहती हैं कि जीविका स्वयं सहायता समूह ने उनके जीवन में एक नया मोड़ दिया है। पहले जहाँ उनका परिवार मजदूरी पर निर्भर था, वहीं अब अपने व्यवसाय से वह आत्मनिर्भर बनी हैं। उनका यह सफर अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है कि मेहनत और सही दिशा में प्रयास करने से सफलता पाई जा सकती है।

कृत्रिम फूल के व्यवसाय से सृजित हुई अच्छी आय

इच्छाएँ बड़ी होती हैं, लेकिन आर्थिक तंगी कई बार उन्हें पूरा करने में बाधा बनती है। ऐसे में आत्मविश्वास, परिवार का सहयोग और समाज का प्रोत्साहन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा प्रखंड के मेदुनी चौक की निवासी संजना कुमारी ने आर्थिक तंगी के बावजूद अपने हुनर से नवाचार शुरू किया था जिससे उनके परिवार की दशा बदल गई है। संजना ने कृत्रिम फूल निर्माण का हुनर अपने मायके में सीखा था, लेकिन ससुराल में आर्थिक तंगी के कारण इसे व्यवसाय में बदलना उनके लिए संभव नहीं हो पा रहा था। सितंबर 2016 में संजना ने माँ चंडिका जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर प्रति सप्ताह बचत करना शुरू किया। समूह की साप्ताहिक बैठकों और प्रेरणादायक चर्चाओं ने उनमें आत्मविश्वास जागृत किया। उन्होंने स्वयं सहायता समूह से 20,000 रुपये का ऋण लिया और कृत्रिम फूल निर्माण और बिक्री का व्यवसाय शुरू किया।

इस काम में उनके पति अभिषेक कुमार ने पूरा सहयोग दिया। संजना घर पर कृत्रिम फूल एवं पत्तियों का निर्माण करती हैं और उनके पति इन उत्पादों को स्थानीय बाजार में बेचते हैं। जीविका के सहयोग से उनके उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर सरस मेला जैसे बड़े बाजारों में प्रदर्शित एवं विपणन करने का अवसर मिला। दिसंबर 2023 के सरस मेला में संजना ने 85000 रुपये से अधिक की बिक्री की और इससे उन्होंने 35,000 रुपये का मुनाफा कमाया। इसके बाद, उन्होंने श्रृंगार की दुकान भी खोली। इससे उनकी मासिक आय बढ़कर 18,000 रुपये से 20,000 रुपये तक हो गई है।

वह अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए भागलपुर से नर्सिंग की पढ़ाई कर रही हैं और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिला रही है। जीविका से मिले मार्गदर्शन और पिता के प्रशिक्षण ने उनके व्यवसाय को नई ऊँचाइयाँ दी हैं। संजना कहती हैं कि जीविका ने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद की है, बल्कि एक व्यवसायी के रूप में पहचान भी दिलवायी है।

संघर्ष से आत्मनिर्भरता तक का प्रेरक सफर

सीता देवी अपने पति नंद किशोर दास और चार बच्चों के साथ सहरसा जिले के सौर बाजार थाना अंतर्गत बराही ग्राम में रहती हैं। खेतिहर मजदूरी और अन्य राज्यों में अस्थायी रोजगार के बावजूद उनके परिवार की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। इस परिस्थिति में परिवार का भरण–पोषण करना कठिन था।

वर्ष 2017 में, सीता देवी ने जय जानकी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया। यह उनके जीवन का एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। स्वयं सहायता समूह का सहयोग से उन्होंने साड़ी का व्यवसाय शुरू किया। वह घर–घर जाकर साड़ियाँ बेचने का काम शुरू की। उनकी मेहनत ने रंग लाया और यह व्यवसाय धीरे–धीरे बढ़ने लगा।

सीता देवी की सफलता में उनके पति का भी योगदान रहा है, जिन्होंने उनके व्यवसाय के संचालन में पूरा समर्थन किए। खेतिहर मजदूरी से समय निकालकर उन्होंने भी व्यापार को आगे बढ़ाने में मदद की। उनकी कड़ी मेहनत और जीविका स्वयं सहायता समूह की सहायता से सीता देवी ने अपने व्यवसाय का विस्तार किया और अब उनके पास साड़ी की एक स्थायी दुकान है।

वर्तमान में, सीता देवी साड़ी व्यवसाय से प्रत्येक माह लगभग 15,000 रुपये की आमदनी अर्जित कर लेती है। यह उपलब्धि न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को स्थिरता प्रदान की है, बल्कि उनके बच्चों की बेहतर शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग भी प्रशस्त किया है। उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सीता देवी आज अपने गांव में आत्मनिर्भरता और महिला सशक्तिकरण का प्रतीक बनी हैं। उनकी कहानी अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो यह दर्शाती है कि संकल्प और मेहनत से किसी भी चुनौती से पार किया जा सकता है।

लैला खातून: हुनर, हिम्मत और उद्यम से मिली नई पहचान

मुजफ्फरपुर जिले के मड़वन प्रखंड स्थित बंगारी गाँव की निवासी लैला खातून अपने परिवार के आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने हेतु प्रयासरत हैं। उनके पति मोहम्मद नूरुद्दीन कोलकाता में एक लेदर फैक्ट्री में पर्स बनाने का काम करते हैं। उससे होने बाले आय उनके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

लैला खातून ने अपने परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का निर्णय लिया। वर्ष 2013 में वह चाँद जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। लेकिन वर्ष 2022 के अंत में उनके जीवन में बड़ा बदलाव तब आया, जब उन्हें उद्योग विभाग द्वारा संचालित बैग क्लस्टर में चैन निर्माण के काम के लिए चुना गया। इस काम के लिए उन्हें समूह के आर्थिक सहयोग से 1.5 लाख रुपये की लागत वाली बाटेक मशीन उपलब्ध कराई गई। इस मशीन के लिए उन्हें मासिक किस्तों में भुगतान करना होता है।

लैला खातून ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। वह प्रतिदिन 2,200 से 2,500 चैन बनाती है। उन्हें प्रति चेन 0.40 रुपये की आय होती है। इस कार्य से उन्हें हर महीने 25,000 रुपये से 30,000 रुपये के बीच आय हो जाती है। इस आय ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर किया है, बल्कि उनके जीवन को भी नई दिशा दी है।

लैला खातून बताती हैं कि जीविका समूह से जुड़ना उनके लिए एक वरदान साबित हुआ। इस काम से उन्हें न केवल आर्थिक सहायता मिली है, बल्कि आत्मनिर्भर बनने का राह भी दिखाया है। अपने इस व्यवसाय से अर्जित आय का उपयोग वह अपने बच्चों की बेहतर शिक्षा पर कर रही हैं। इसके अलावा, उन्होंने हाल ही में एक नई गाड़ी खरीदी है, जिससे बैग क्लस्टर से कच्चा माल लाने और तैयार उत्पाद को पहुँचाने में आसानी होती है।

उनके पति भी कोलकाता में लेदर फैक्ट्री में काम कर परिवार को सहारा दे रहे हैं और लैला खातून घर पर रहकर कार्य कर रही हैं। दिलचस्प बात यह है कि चार साल पहले लैला खातून ने समूह से ऋण लेकर अपने पति के लिए एक मशीन भी खरीदी है। लैला खातून बताती है कि अपने पति के साथ रहकर सिलाई का काम सीखी थी, जो अब उनके चैन निर्माण व्यवसाय में काम आ रहा है।

लैला खातून की यह यात्रा यह दर्शाती है कि दृढ़ संकल्प, सही मार्गदर्शन और सामूहिक सहयोग से किसी भी कठिनाईयाँ का सामना किया जा सकता है। उनका कहना है, 'घर के सारे कामों को देखते हुए इस व्यवसाय से आमदनी मेरे लिए वरदान है। जीविका समूह से जुड़कर मैंने आर्थिक उन्नति की है।'

लैला खातून आज न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभा रही हैं, बल्कि अपने आस–पास के अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा भी बन गई हैं। लैला खातून की कहानी यह साबित करती है कि सही अवसर और संगठन की शक्ति से महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार